NTA UGC NET

SANSKRIT

SAMPLE THEORY

– संहिताएँ
– ब्राह्मण ग्रन्थ
– आरण्यक ग्रन्थ
– उपनिशद

9001894070

www.vpmclasses.com

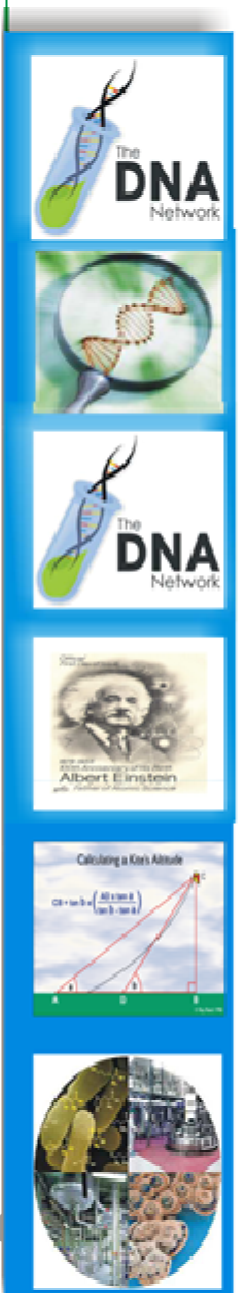

UGC NET SANSKRIT

SAMPLE THEORY

वैदिक साहित्य

- संहिताएँ
- ब्राह्मण ग्रन्थ
- आरण्यक ग्रन्थ
- उपनिशद
- संवाद सूत्र
- वैदिक साहित्य का इतिहास
- संहिताओ क वेदाङ्ग

VPM CLASSES
For IIT-JAM, JNU, GATE, NET, NIMCET and Other Entrance Exams
Web Site www.vpmclasses.com E-mail-vpmclasses@yahoo.com

वैदिक साहित्य

वेद भारतीय संस्कृत के मूल स्त्रोत हैं अर्थात भारतीय संस्कृति का वास्तविक ज्ञान वेदों एवं वैदिक साहित्य से ही होता है। वैदिक साहित्य को चार भागों में विभाजित किया गया है–

(1)वेदों की संहिताएँ

(2) ब्राह्मण ग्रन्थ

(3) आरण्यक ग्रन्थ

(4) उपनिषद ।

वेद

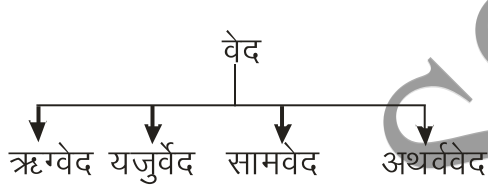

संहिता भाग में मंत्रो का शुद्ध रूप रहता है जो देवस्तुति एवं विभिन्न यज्ञों के समय पढ़ा जाता है अभिलाषा प्रकट करने वाले मंत्रों तथा गीतों का संग्रह होने से संहिताओं को संग्रह कहा जाता है। इन संहिताओं में अनेक देवताओं से सम्बद्ध सूक्त प्राप्त होते हैं।

अग्नि सूक्त

ऋषि – मधुच्छन्दा, निवास स्थान – पृथ्वीस्थानीय, सूक्त संख्या – 200

ऋग्वेदीय देवों में अग्नि का सबसे प्रमुख स्थान हैं वैदिक आर्यों के लिए देवताओं में इन्द्र के पश्चात अग्नि देव का ही पूजनीय स्थान है। वैदिक मंत्रों के अनुसार अग्नि देव –नेतृत्व शक्ति से सम्पन्न, यज्ञ की आहुतियों को ग्रहण करने वाला तथा तेज एवं प्रकाश का अधिष्ठाता है। अग्नि को द्यावाप्रथ्वी का पुत्र बताया गया है। मातरिश्वा भृगु तथा अंगिरा इसे भूतल पर लाऐ। अग्नि पार्थिव देव है। यज्ञाग्नि के रूप में इसका मूर्तिकरण प्राप्त होता है। अतः इसे ऋत्विक होता और पुरोहित बताया गया है। यह यजमानों के द्वारा विभिन्न देवों के उद्देश्य से अपने में प्रक्षिप्त हविष् को उनके पास पहुँचाता है।

यथा – अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातमम्।।

ऋग्वेद में अग्नि को धृतपृष्ठ, शोचिषकेश, रक्तश्मश्रु,रक्तदन्त, गृहपति, देवदूत, हव्यवाहन, समिधान, जातवेदा, विश्वपति, दमूनस, यविष्ठय, मेध्य आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

' मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत' पुरुष सूक्त के अनुसार अग्नि और इन्द्र जुडवां भाई हैं इसका रथ सोने के समान चमकता है और दो मनोजवा एवं मनोज्ञ वायुप्रेरित लाल घोड़ो द्वारा खींचा जाता है। अग्नि

VPMCLASSES

का प्राचीनतम प्रयोजन दुष्टात्माओं और आक्रामक,अभिचारों को समाप्त करना है। अपने प्रकाश से राक्षसों को भगाने के कारण ये रक्षोंहन् कहे गए हैं। देवों की प्रतिष्ठा करने के लिए अग्नि का आह्वान किया जाता है– जैसे

'अग्निर्होता कविक्रतु सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरागमत् ।।

सवितृ सूक्त

सूक्त संख्या – 11

ऋषि – गृत्समद एवं हिरण्यस्तूप निवास – द्युस्थानीय

पवित्र गायत्री मंत्र का सम्बन्ध सवितृ से ही माना जाता हैं सविता शब्द की निष्पत्ति सु धातु से हुई है जिसका अर्थ है – उत्पन्न करना, गति देना तथा प्रेरणा देना । सवितृ देव का सूर्य देवता से बहुत साम्य है। सविता का स्वरूप आलोकमय तथा स्वर्णिम है। इसीलिए इसे स्वर्णनेत्र, स्वर्णहस्त, स्वर्णपाद, एवं स्वर्ण जिव्य की संज्ञा दी गई है। उसका रथ स्वर्ण की आभा से युक्त है जिसे दो या अधिक लाल घोड़े खींचते है, इस रथ पर बैठकर वह सम्पूर्ण विश्व में भ्रमण करता है। इसे असुर नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। प्रदोष तथा प्रत्यूष दोनों से इसका सम्बन्ध है। हरिकेश, अयोहनु, अंपानपात्, कर्मक्रतु, सत्यसूनु, सुमृलीक, सुनीथ आदि इसके विशेषण हैं।

विष्णु सूक्त

ऋषि – दीर्घतमा निवास स्थान – द्युस्थानीय सूक्त संख्या – 5

विष्णु शब्द विष धातु से बनता है जिसका अर्थ है व्यापनशील होना। अर्थात तीनों लोकों में अपनी किरणों को फैलाने वाला। विष्णु शब्द का एक अन्य अर्थ क्रियाशील होना भी है। यह सभी – देवताओं में अधिक क्रियाशील है तथा उनकी सहायता भी करता है।'वृत्र' वध के समय विष्णु ने इन्द्र की सहायता की थी। ऋग्वेद में विष्णु द्वारा तीन पगों में ब्रह्माण्ड को नापने का महत्वपूर्ण कार्य का वर्णन मिलता है।विष्णु के लिए 'त्रिविक्रम'शब्द का प्रयोग भी मिलता है जिसका अर्थ है सूर्य रूप विष्णु पृथ्वीलोक, द्युलोक और अंतरिक्ष में अपनी किरणों का प्रसार करते हैं तथा उनके प्रकाश से जरायुज, अण्डज और उद्भिज सभी प्रकार की सृष्टि होती है। विष्णु शरीर का अधिष्ठातृ देवता है । उनका उच्चलोक परमपद है जहाँ मधु उत्सव है। पक्षियों में 'गरुण' इनका वाहन है। विष्णु को उरुक्रम, उरगाय भीम गिरिष्ठा, वृष्ण, गिरिजा, गिरिक्षत, सहीयान् नामों से सम्बोधित किया गया है।

इन्द्र सूक्त

ऋषि – गृत्समद निवास स्थान – अन्तरिक्ष सूक्त संख्या – 250

वेदीय देवों के प्रमुख देव इन्द्र है अपने महानकार्यो एवं गुणों के कारण इन्द्र आर्यों का राष्ट्रीय एवं जातीय देवता बन गया। ऋग्वेदानुसार इन्द्र के तीन विशेष गुण है– महान कार्यो को करने वाला, अतुल पराक्रमी तथा असुरों को युद्ध में जीतना। यथा – यो जात एव प्रथमो मस्वान् देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।

यस्य शुष्माद्रो देसी अभ्यसेता नृम्णस्य महना स जनास इन्द्रः।।

निरूक्ताकार यास्क कहते है – " या च का च बलकृतिः इन्द्र कर्मेण तत्"।

इन्द्र के पिता 'द्यौस' अग्नि और पूषा भाई तथा इन्द्राणी पत्नी हैं। इन्द्र के आयुधों में वज्र प्रमुख है। जब इन्द्र सोमपान करते मरुत की सहायता पाकर वृत्र पर आक्रमण करते हैं तब इस युद्ध में द्युलोक और पृथ्वीलोक काँप उठते हैं, पर्वत नष्ट हो जाते हैं तथा उनसे जल के झरने बहने लगते हैं। जिससे सूखी नदियाँ जलपूर्ण हो प्रवाहित होने लगती हैं। यथा–

यः पृथिवीं व्यथमानामंदृहद् यः पर्वतान् प्रकुपितां अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः।।

ऋग्वेद में इन्द्र को वज्री, वज्रबाहु , शचीपति,शतक्रतु, मत्वान्, दस्योहन्ति, शिप्री, हरिशमश्रु, मनस्वान्, वसुपति, तुविष्मान् आदि नामों से जाना जाता है।

रुद्र सूक्त

ऋषि – गृत्समद निवास स्थान – अन्तरिक्ष सूक्तसंख्या –3

ऋग्वेद में रुद्र को शक्तिशाली तथा भयंकर रूप में चित्रित किया गया है। दृढ़ अंगों से युक्त, यमराज आदि आठ मूर्तियों वाला प्रचण्ड पालन पोषण करने वाला व भूरे रंग का वह रुद्र दीप्तिमान् स्वर्णलंकारो से चमकता है। उसके पास विशेष आयुध हैं। शस्त्र के रूप में धनुष बाण धारण करता है। रुद्र रथ पर आसीन होकर नित्य युवा सिंह के समान भयंकर शत्रुओं को मारने वाले और उग्र स्वरूप वाले हैं। ऋग्वेद में रुद्र को मरुतों का पिता एवं स्वामी भी कहा गया है। रुद्र ने मरुतों को पृश्नि नाम की गौओं के थनों से उत्पन्न किया था। रुद्र को स्वास्थ्य का देवता भी कहा गया है।

यथा –

मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती।
उन्नो वीरां अर्पय भेषजेभिर् भिषकतमं त्वा भिषजां श्रंणोमि।।

VPM CLASSES

रुद्र के अधृष्म, द्रुतगामी, प्रचेतस् इणाश, विश्वनियंता, भिषसमम् मीढ़वान नीलोदर, नीलकंठ, लोहितपृष्ठ, चेकितान आदि विशेषण हैं।

बृहस्पति सूक्त

ऋषि – वामदेव निवास स्थान – पृथ्वीस्थानीय सूक्त संख्या – 11

बृहस्पति एक ओर जहाँ युद्ध का देवता है, वहीं दूसरी ओर पुरोहित का कार्य भी करता है, एवं स्त्रोतों की रचना की करता है। इस प्रकार बृहस्पति में ब्राह्मण तथा क्षत्रिय दोनों की चरित्रगत विशेषताएँ पायी जाती हैं। इसकी पीठकाली तथा श्रृंग तीक्ष्ण हैं। बृहस्पति स्वर्णिम वर्ण का देवता है। यह शस्त्र के रूप में धनुष –बाण तथा परशु धारण करता है। बृहस्पति को वज्रिन भी कहा गया है वह युद्ध में इन्द्र की सहायता करता है। इस के बिना कोई भी यज्ञ कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। बृहस्पति मनुष्यों को उत्तम वय, सौभाग्य प्रदान करता है, ऋणों को पृष्ठ, ब्रह्मणस्पति, शक्तिपुत्र, सुगोपाः, मरुत्संखा, द्युतिमान्, गणपति वाचस्पति भी कहा गया है।

अश्विनौ

ऋषि – कक्षीवान् एवं वसिष्ठ निवास स्थान – द्युस्थानीय सूक्तसंख्या – 50

अश्विनी देवता दो अलग –अलग भाई हैं। सुनहरी चमक सौन्दर्य और कमल की मालाओं से ये सदा विभूषित रहते हैं। इनका मार्ग स्वर्णमय है अश्विनी देवता को मधु अतिप्रिय है। इनके रथ में तीन पहिए हैं और उनका वेग पवन से भी अधिक तेज है इसमें सुनहरी पंखों वाले घोड़े जुते हैं। इस रथ को ऋभु नामक देवताओं ने बनाया था। वे उषा के प्रकट होने के अनन्तर और सूर्योदय के मध्य प्रकट होते हैं। अश्विनी देवता स्वर्ग के पुत्र है। उनको विवस्वान् और त्वष्टा की पुत्री सरण्यू का पुत्र भी कहा गया है। ये देवता कुशल चिकित्सक तथा स्वर्ग के वैद्य है। अश्विनौ के निचेतास, हिरण्यवर्तनी, रुद्रवर्तनी, पुरुशाकतमा, मधुपाणि, तमोहन्ता, शुभ्रस्पति, दिवोनपात् अश्वमद्या, वृष्णा आदि भी विशेषण हैं।

वरुण सूक्त

ऋषि – शुनः शेप एवं वशिष्ठ निवास स्थान – द्युस्थानीय सूक्त संख्या 12

वरुण देव द्युलोक और पृथिवी लोक को धारण करने वाले तथा स्वर्गलोक और आदित्य एवं नक्षत्रों के प्रेरक हैं। ऋग्वेद में वरुण का मुख्य रूप शासक का है। वह जनता के पाप पुण्य तथ सत्य असत्य का लेखा जोखा रखता है। ऋग्वेद में वरुण का उज्जवल रूप वर्णित है। सूर्य उसके नेत्र है। वह सुनहरा चोगा पहनता है और कुशा के आसन पर बैठता है। उसका रथ सूर्य के समान दीप्तिमान है तथा उसमें घोड़े जुते हुए हैं। उसके गुप्तचर विश्वभर में फैलकर सूचनाएँ लाते हैं। वरुण रात्रि और दिवस का अधिष्ठाता है। वह संसार के नियमों में

VPM CLASSES

चलाने का व्रत धारण किए हुए है। ऋग्वेद में वरुण के लिए क्षत्रिय स्वराट, उरुशंश, मायावी, धृतव्रतः दिवः कवि, सत्यौजा, विश्वदर्शन आदि विशेषणों का प्रयोग मिलता है।

उषस् सूक्त

ऋषि – दीर्घतमा, वामदेव, वसिष्ठ   निवास स्थान – द्युस्थानीय   सूक्त संख्या 20

उषा शब्द वस् दीप्तौ धातु से निष्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है प्रकाशमान होना। इस सौन्दर्य की देवी के उदित् होते ही आकाश का कोना कोना जगमगाने लगता है तथा विश्व हर्ष के अतिरेक से भर जाता है। यह प्रत्येक प्राणी को अपने कार्य में प्रवृत कर देती है। उषा का रथ चमकदार है और उसे लाल रंग के घोड़े खींचते है। उषा को रात्रि की बहन भी कहा गया है। आकाश से उत्पन्न होने के कारण उषा को स्वर्ग की पुत्री भी कहा गया है। उषा सूर्य की प्रेमिका है इसके अतिरिक्त उषा का सम्बन्ध अश्विनी कुमारो से भी कहा गया है। उषा अपने भक्तों को धन, यश, पुत्र आदि प्रदान करती हैं ऋग्वेद में उषा को रेवती, सुभगाः, प्रचेताः, विश्ववारा, पुराणवती मधुवती,ऋतावरी, सुम्नावरी, अरुषीः, अमर्त्या आदि विशेषणों से अलंकृत किया गया है।

सोम सूक्त

ऋषि – कण्व   निवास स्थान – पृथ्वीस्थानीय   सूक्त संख्या – 120

नवम मण्डल से सम्बद्ध सोम ऋग्वेद का प्रमुख देवता है। ऋग्वेदनुसार सोम एक वनस्पति थी जो मुŒजवान पर्वत पर पैदा होती थी। इसका रस अत्यधिक शक्तिशाली एवं स्फूर्तिदायक था। सोमरस इन्द्र का प्रियपेय पदार्थ था सोमरस का पान करके ही उसने वृत्र का वध किया था। सोमरस देवताओं को अमरत्व प्रदान करता है। सोम का वास्तविक निवास स्थान स्वर्ग ही है। श्येन द्वारा पृथ्वी पर औषधि के रूप में लाया गया है। ऋग्वेद में सोम को त्रिषधस्थ, विश्वजित्, अमरउद्दीपक, अघशंस, स्वर्वित्, पवमान आदि विशेषण मिलते हैं।

संहिताएँ

वेद शब्द का निर्माण 'विद्' धातु से 'घञ्' प्रत्यय करने से होता है। इसका अर्थ है ज्ञान। यह ईश्वर द्वारा मानव मात्र के लिए दिया हुआ ज्ञान है। विश्व के मानव इतिहास तथा जीवन मूल्यों की स्थापना का आधार वेदों को ही माना जाता है। सायणाचार्य के मतानुसार – 'इष्टप्राप्तयनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः।

संहिता का अर्थ है संग्रह अर्थात् जिन ग्रन्थों में मूल्यों या ऋचाओं का संग्रह है उन्हें संहिता कहते हैं। संहिता में आर्यों के विविध देवताओं की प्रशंसा और स्तुति में गाये जाने वाली ऋचाएँ या मंत्र हैं। वेदो की संख्या ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अर्थवेद के भेद से चार है।

1. **ऋग्वेदः–** 'ऋग्वेद' ही 'ऋक्' संहिता के नाम से जाना जाता है 'ऋच्यते स्तूयते यया सा ऋक' इससे ऋक् शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। ऋग्वेद में 'ज्ञान' अर्थात भक्तिभाव की प्रधानता है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने वेदों का ज्ञान वायु, अग्नि, आदित्य और अंगिरा ऋषियों को दिया इन चारों ऋषियों ने अपने पुत्रों तथा अन्य ऋषियों को दिया। ऋग्वेद की प्रमुख विशेषता यह है कि इसका प्रारम्भ अग्नि सूक्त तथा अन्त संज्ञान सूक्त से किया गया है। महाभाष्यकार पतंजलि ने ऋग्वेद की 21 शाखाएँ मानी हैं तथा जिनमें से शाकल, वाष्कल, आश्वलायिनी, शांखायनी तथा माण्डूकायनी प्रमुख शाखाएँ हैं जिनमें से शाकल शाखा ही पूर्ण रूपेण प्राप्त होती है। ऋग्वेद का 'होता'. ऋत्विक है। इसमें 1028 सूक्त तथा $10580\frac{1}{4}$ मंत्र हैं।

2. **यजुर्वेदः** चारों वैदिक संहिताओं में यजुर्वेद का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसका मुख्य देवता वायु तथा 85 शाखाएँ है, कहीं–कही 100, 101 शाखाओं का भी उल्लेख प्राप्त है। यजुर्वेद में यजुषों का संग्रह है अर्थात यज्ञ की दृष्टि से जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण मंत्र हैं वे यजुष् कहलाये। यजुर्वेद के शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद नामक दो भेद हो जाते हैं। शुक्ल यजुर्वेद की (1) वाजसनेयी (2) काण्व शाखा, कृष्ण यजुर्वेद की (i) तैत्तिरीय शाखा (ii) मैत्रायणी शाखा (iii) कठ शाखा (iv) कपिष्ठल शाखा प्रसिद्ध है।

3. **सामवेदः** सामवेद का प्रतिपाद्य विषय उपासना, ऋत्विक उदगाता तथा देवता सूर्य है सामवेदीय मंत्र जब विशेष गान पद्धति से गाए जाते हैं तो उनको साम कहा जाता है। सामवेद पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक दो भेदों में विभक्त है। 'सहस्रवर्त्मासामवेद' अर्थात् सामवेद की सहस्रों शाखाएँ बताई गई है। जिनमें से कौथुमीय, राणायणीय, जैमिनीय शाखाएँ उपलब्ध हैं।

4. **अथर्ववेद** : अथर्ववेद को अंगिरसवेद, ब्रह्मवेद, भैषज्येवद, छन्दोवेद, महीवेद के नाम से भी जाता है। अथर्ववेद का ऋत्विक ब्रह्मा, देवता सोम तथा आचार्य सुमन्तु हैं। अथर्ववेद की पिप्पलाद मोद, स्तोद, जलद, शौनकीय, जाजल, ब्रह्मवेद, देवदर्श, चारणवैद्य शाखाएँ हैं। जिनमें से शौनक एवं पिप्पलाद शाखा ही उपलब्ध है। अथर्ववेद के –सर्पवेद, असुरवेद, इतिहासवेद, पुराण वेद आदि उपवेद भी माने जाते हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थ

ब्रह्मन् के व्याख्यापरक ग्रन्थों का नाम ब्राह्मण है। ''ब्राह्मण बह्मसंघाते वेदभागे नपुंसकम।'' भट्टभास्कर ने कर्मकाण्ड तथा मंत्रों के व्याख्यान ग्रन्थों को ब्राह्मण कहा है। ''ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मंत्राणां व्याख्यानग्रन्थः।'' यज्ञों के अनुष्ठान के समय प्रयोग में लाए जाने वाले संहिता भाग के विधि विधानों का संकलन इन ब्राह्मण ग्रन्थों में सुरक्षित है। इन ग्रन्थों को ब्राह्मण कहे जाने के तीन कारण हैं तदनुसार

इसके तीन अर्थ हैं ब्रह्मन का अर्थ मन्त्र, यज्ञ और रहस्य है। दार्शनिक आचार्य वाचस्पति मिश्र के अनुसार 'ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रयोजन निवर्जन, मन्त्रों का विनियोग, अर्थवाद और विधि माना है। ''हेतुनिर्वजनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधि । परक्रिया पुरकल्पो व्यवधारण कल्पना ।। उपमानं दशैते तु विधियो ब्राह्मणस्य तु ।।'' शबरस्वामी ने अपने ग्रन्थशाबर भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतिपादित साधनों की संख्या दस मानी है।

1. **ऋग्वेदीय ब्राह्मण ऐतरेय ब्राह्मण :** 40 अध्यायों में विभक्त ऐतरेय ब्राह्मण के रचनाकार महिदास ऐतरेय हैं। इसमें सोमयाग सम्बंधी–अग्निष्टोम, अग्निहोत्र तथा शुनःशेप आख्यान का वर्णन है।

   शांखायन या कौषीतकि ब्राह्मणः 30 अध्यायों में विभक्त शांखायन ब्राह्मण में अग्न्याधान अग्निहोत्र दर्शपौर्णमास और चार्तुमास्य इष्टियों का वर्णन है।

2. **यजुर्वेदीय ब्राह्मण – शतपथ ब्राह्मण :**इसके रचनाकार ऋषि याज्ञवल्क्य माने जाते है। यह ब्राह्मण शुक्ल याजुर्वेद की माध्यन्दिन तथा काण्व दोनों शाखाओं पर उपलब्ध होता है। इसकी प्रथम शाखा में 100 अध्याय 14 काण्ड तथा द्वितीय शाखा में 104 अध्याय तथा 17 काण्ड हैं।

   तैत्तिरीय ब्राह्मण :कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा पर एकमात्र तैत्तिरीय ब्राह्मण में तीन काण्ड हैं। प्रथम काण्ड और द्वितीय काण्ड में आठ–आठ अध्याय और तृतीय में बारह, अध्याय हैं। इसके प्रथम काण्ड में गवामयन, अग्नयाधान वाजपेय में नक्षत्रेष्टि, पुरुषमेघ आदि का वर्णन है।

3. **सामवेदीय ब्राह्मण – पंचविंश ब्राह्मण :** इसमें 25 प्रपाठक और 347 खण्ड हैं। इस ब्राह्मण में सोमयागों का वर्णन है। इसे महाब्राह्मण और ताण्ड्य ब्राह्मण भी कहते हैं।

   षडविंश. इसमें पांच प्रपाठक है पांचवे प्रपाठक को अदभुत ब्राह्मण कहा जाता है।

   छान्दोग्य. इसमें दो प्रपाठक और दोनों आठ–आठ खण्डों में विभक्त हैं।

   आर्षेय. सामगान विषयक इस ब्राह्मण में तीन प्रपाठक प्रथम में 28 द्वितीय में 25 और तृतीय में 29 खण्ड है। **सामविधान–** इस ब्राह्मण में अभिचार आदि कर्मो का वर्णन है। इसमें तीन प्रपाठक तीनों में क्रमशः 8–8–9 खण्ड है। **जैमिनीय–** अग्निहोत्र का इस ब्राह्मण में विस्तृत वर्णन है। यह तीन भागों में विभक्त है। प्रथम में 360 द्वितीय में 437 तृतीय में 385 खण्ड हैं। **वंश ब्राह्मण –** इस ब्राह्मण में सामवेद के आचार्यो की वंश परम्परा का वर्णन है। इसमें तीन खण्ड है। **देवता ध्याय –** तीन खण्डों में विभक्त है। इसमें अरण्य गान, ग्राममेय, सामतन्त्र आदि हैं।

4. **अथर्ववेदीय ब्राह्मण – गोपथब्राह्मण.** यह पूर्व गोपथ तथा उत्तर गोपथ में विभक्त है। पूर्वगोपथ पांच अध्यायों से युक्त है। इसमें अश्वमेघ, पुरूषमेघ अग्निष्टोम यज्ञों का वर्णन है तथा उत्तर गोपथ में 6 अध्याय है।

VPM CLASSES

इसमें विभिन्न मंत्रो और आख्यायिकाओं का वर्णन है।

आरण्यक

'अरण्ये भवम् इति आरण्यकम्' सायणाचार्य ने तैत्तिरीय और ऐतरेय आरण्यकों के भाष्य में आरण्यक का अर्थ किया है–

अरण्याध्ययनादेतत् आरण्यकमितीर्यते।

अरण्ये तदधीयीतेत्येवं वाक्ये प्रवक्ष्यते।। तैत्तिरीय आरण्यक

अरण्य एव पाठ्यत्वादारण्यकमितीर्यते। ऐतरेय आरण्यक

आत्मा–परमात्मा, ज्ञान, कर्म एवं उपासना का समन्वय आरण्यकों का मुख्य विषय है। आरण्यकों की संख्या 1130 मानी जाती है, लेकिन वर्तमान में 7 आरण्यक ही प्राप्त होते हैं।

1. **ऋग्वेदीय आरण्यक – ऐतरेय आरण्यक –** महाव्रत, प्राणविद्या आदि के वर्णनों से युक्त इस आरण्यक में 17 अध्याय है जो पांच भागों में विभक्त है।

   शांखायन आरण्यक. महाव्रत आदि के वर्णनों से युक्त इस आरण्यक में 15 अध्याय हैं। इसका तृतीय से षष्ठ अध्याय तक कौषीतिकि उपनिषद के नाम से प्रसिद्ध है।

2. **यजुर्वेदीय आरण्यक–वृहदारण्यक–** शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद दोनों शाखाओं पर प्राप्त इस आरण्यक में यज्ञों के रहस्य का वर्णन है।

   तैत्तिरीय आरण्यक. अग्नि उपासना, यज्ञोपवीत का निर्देश, पंच महायज्ञ आदि के वर्णनों से युक्त इस आरण्यक में 10 प्रपाठक है।

   मैत्रायणी आरण्यक. 7 प्रपाठकों में विभक्त इसमें आरण्यक तथा उपनिषदों का मिश्रण है।

3. **सामवेदीय आरण्यक–तवलकार आरण्यक –** इसमें ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषदों का मिश्रण है। यह चार अध्यायों में तथा प्रत्येक अध्याय अनुवाकों में विभक्त है।

   छान्दोग्य आरण्यक – इस आरण्यक को सत्यव्रत ने सामवेद आरण्यक संहिता के नाम से प्रकाशित कराया है।छान्दोग्योपनिषद् के प्रथम अध्याय को आरण्यक के नाम से जाना जाता है।

4. **अथर्ववेदीय आरण्यक उपलब्ध नहीं है।**

उपनिषद्

वेदरूपी वृक्ष की ब्राह्मण यदि शाखाएँ है तथा आरण्यक उन शाखाओं से उत्पन्न पुष्प हैं तो यह भी मानना होगा कि उस आरण्यक रूपी पुष्प की सुगन्ध उपनिषदें हैं। उपनिषद् शब्द 'उप' एवं 'नि' उपसर्ग

VPM CLASSES

पूर्वक 'सद्'धातु से 'क्विप् प्रत्यय होकर बनता है। जिससे ''सद्'' का अर्थ होता है बैठना, उप का अर्थ होता है समीप । अर्थात गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। वेदान्त की उपाधि से विभूषित उपनिषदों की संख्या 108 मानी जाती है जिनमें. ऋग्वेद के 10, शुक्ल यजुर्वेद के 19, कृष्ण यजुर्वेद के 32, सामवेद के 16 तथा अथर्ववेद के 31 उपनिषद हैं। आचार्य शंकर ने प्रामाणिक 11 उपनिषदों पर भाष्य लिखा है। ईष केन, कठ प्रश्न मुण्ड माण्डूक्य तित्तिराः।ऐतरेयं च छान्दोग्यं वृहदारण्यकं तथा। इनके अतिरिक्त श्वेताश्वतर, कौषीतिकि व मैत्रायणी भी प्रमुख उपनिषद हैं।

1. **ऋग्वेदीय उपनिषद्– ऐतरेयोपनिषद्** – ऋग्वेदीय ऐतरेयारण्यकस्थ चतुर्थ से षष्ठ अध्यायों का ही नाम ऐतरेयोपनिषद् है। तीन अध्यायों में विभक्त इस उपनिषद् में सृष्टिवाद आदर्शवाद तथा आत्मवाद का वर्णन किया गया है।

कौषीतकि उपनिषद्– शांखायन आरण्यक के चार अध्यायों में विभक्त इस उपनिषद् के प्रथम अध्याय में देवयान तथा पितृयान, द्वितीय में विशुद्ध दार्शनिक सिद्धान्त तृतीय में प्रतर्दन इन्द्र से ब्रह्म विद्या सीखते हैं। चौथे में वृहदारण्यकस्थ बालाकि अजातशत्रु –आख्यान की पुनरावृत्ति है।

2. **शुक्लयजुर्वेदीय उपनिषद्** – वृहदारण्यकोपनिषद यह सबसे विपुलकाय उपनिषद् है। छः अध्यायों वाले इस उपनिषद् के प्रथम अध्याय में सृष्टि, कर्ता विचार , द्वितीय में बालकि द्वारा काशीराज अजातशत्रु से उपदेश –ग्रहण आदि तृतीय में जनक सभा में जैबलि द्वारा उददालक आरुणि को उपदेश है।

ईशावास्योपनिषद् – यह सर्वाधिक लघुकाय शुक्ल यजुर्वेदीय 40 वाँ अध्याय है। इसमें 18 मंत्र हैं जिनमें कर्म, ज्ञान, समुच्चयवाद का बीज पाया जाता है।

कृष्ण यजुर्वेदीय उपनिषद् – कठोपनिषद् – अद्वैत तत्व के प्रतिपादन के लिए प्रसिद्ध इस उपनिषद् में 2 अध्याय 6 बल्ली तथा 108 मंत्र हैं। हैं।इसमें यम नचिकेता संवाद, आत्मा व मृत्यु के स्वरूप का वर्णन है।

मैत्रायणी उपनिषद् – सात प्रपाठक वाले इस उपनिषद् में सांख्यदर्शन के तत्व, योगषडङ्गों तथा हठयोग के मंत्र सिद्धान्तों का वर्णन दर्शनों का विकास समझने के लिए आवश्यक माने गए हैं।

श्वेताश्वतरोपनिषद्– कृष्ण यजुर्वेद के श्वेताश्वतर ब्राह्मण का एक भाग यह उपनिषद ग्रन्थ है। छः अध्यायों में विभक्त उसके प्रथम अध्याय में जगत् के कारण जीवन के हेतु एवं उसके आधार से सम्बधित प्रश्नोत्तर द्वितीय में योग तृतीय से पंचम तक शैव सिद्धान्त एवं सांख्य तत्व से सम्बधित ज्ञान और षष्ठ अध्याय में गुरु भक्ति का वर्णन है।

VPM CLASSES

तैत्तिरीयोपनिषद्– तैत्तिरीयारण्यक के सप्तम, अष्टम और नवम् अध्यायों को तैत्तिरीय उपनिषद् कहते है। जिन्हें क्रमशः शिक्षा बल्ली , ब्रह्मनन्द बल्ली तथा भृगु बल्ली कहते हैं। इसमें ओंकार का महात्म्य, ब्रह्मतत्व का विवेचन वरुण भृगु संवाद वर्णित है।

2. **सामवेदीय उपनिषद् – केनोपनिषद् –** सामवेद की तवलकार शाखा से सम्वद्ध इसमें चार खण्ड हैं। जिसके प्रथम खण्ड में ब्रह्म के निर्गुण रूप का वर्णन, द्वितीय में ब्रह्म का रहस्य स्वरूप तथा तृतीय चतुर्थ में ब्रह्म की महिमा का वर्णन है।

छान्दोग्योपनिषद् – सामवेदीय यह उपनिषद् प्राचीनता, गम्भीरता तथा ब्रह्म ज्ञान प्रतिपादन की दृष्टि से उपनिषदों में नितान्त प्रौढ़ प्रामाणिक तथा प्रमेय बहुल है। इसमें 8 अध्याय हैं। जिनमें विविध विद्याओं शैव उद्गीथ, सूर्योपासना, गायत्रीवर्णन, रैक्व के दार्शनिक –तथ्य इन्द्र विरोचन आख्यान एवं प्रवाहण जैबलि के दार्शनिक सिद्धान्तों आदि के दर्शन होते हैं।

4 **अर्थर्ववेदीय उपनिषद्** – मुण्डकोपनिषद् – अथर्ववेद की शौनक शाखा से सम्बद्ध इस उपनिषद् में 3 मुण्डक और 2 –2 खण्ड हैं। इसमें परा तथा अपरा विद्या का रहस्य समझाया गया है।

प्रश्नोपनिषद् – अथर्ववेद की पिप्पलाद् संहिता के ब्राह्मण ग्रन्थ के एक भाग का नाम प्रश्नोपनिषद् है। छः खण्डों में विभक्त इसमें पिप्पलाद ऋषि द्वारा सुकेशा, सत्यवान, आश्वलायन, भार्गव, कात्यायन और कबन्धी ऋषियों से आध्यात्म विषयक उठाए गए प्रश्नों के उत्तर दिए हैं।

माण्डूयोपनिषद् – अथर्ववेद से सम्बद्ध इस उपनिषद् में 12 मंत्र हैं। तथा सम्पूर्ण अंश गद्यात्मक है। ओंकार के त्रिकालव्यापी तथा परवर्ती वेदान्त दर्शन की चिरन्तन मूल स्थापना के कारण इसका बहुत महत्व है।

संवाद सूक्त

यम –यमी –(ऋग्वेद 10/10) यम – यमी संवाद सूक्त में यम भाई तथा यमी (बहन) का वार्तालाप है। यमी अपने भाई यम से अपने साथ सहवास करने को कहती है, लेकिन यम कहता है मैं तुम्हारे साथ सहवास नहीं कर सकता तुम मेरी बहन हो।

न ते सखा सख्यं बष्ट्येतत् सलक्ष्मा यद्विपुरूषा भवति।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तारि उर्विया परिख्यन् ।।

यमी कहती है ईश्वर ने तो हमें गर्भावस्था में ही पति – पत्नि बना दिया है और फिर ऐसा करने से हमें कौन देख रहा है। यम कहता है कि देवताओं के दूत सर्वत्र हैं वे उचित – अनुचित का ध्यान रखते हैं।

यमी कहती है यमस्य मा यम्यं काम आगर्नसमाने योनौ सहशेय्याय ।

VPM CLASSES

जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद्बृहेव रथ्येव चक्रा ।।

यम यमी से कहता है कि तुम किसी अन्य पुरूष का आलिङ्गन करो । यम की बातें सुनकर यमी उत्तेजित होकर बोली ऐसे भाई से क्या लाभ ?

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।

काममूता वहे तद्रापामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि ।।

अन्त में यम – यमी के साथ सहवास स्थापित नहीं करता हैं।

पुरुखा –उर्वशी –(ऋग्वेद 10/95)– इसमें पुरुखा और उर्वशी को प्रेमकथा का वर्णन है। इन्द्र द्वारा वियोग कराने पर उर्वशी पुरुरवा के त्याग कर स्वर्ग चली जाती है।

चरन् सरसि सोऽपश्यद्भिरूपामिवोर्वशीम् ।

सखीभिरभिरूपाभिः पŒचभि पार्श्वतो वृताम् ।।

पुरुरवा उर्वशी से कहता है तुम मेरे साथ चलो परन्तु उर्वशी मना करते हुए कहती है–

तामाह पुनरेहीति दुःखात्सा त्वब्रवीत्नृपम्।

अप्राप्याहं त्वयाद्येहस्वर्गे प्राप्यसि पुनः।।

जब पुरुरवा आत्मघात करने का प्रयास करता है तो उर्वशी कहती है –

पुरुरवो मा मृधा प्रपन्तो मात्वा वृकासो अशिवास उक्षन् ।

न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति, सालावृकाणां हृदयान्येता ।।

सरमापणि –(ऋग्वेद –10/108) – इसमें पणि इन्द्र की गायों को चुरा लेते हैं तब इन्द्र की आज्ञानुसार सरमा देवशुनीकुतिया गायों का पता लगाने जाती है वह पणियों से कहती है –

इन्द्रस्य दूती रिषिता चरामि, महइच्छन्ती पणयो निधीन्व : ।

पणि सरमा से कहते हैं तुम यही वास करो, हम तुम्हें गायों का एक हिस्सा देंगे।

एवा च त्वं सरम आजगन्थ प्रवधिता सहसा दैव्येन ।

स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम् ।।

सरमा बोली – हे पणियों ! तुम इन्द्र के क्रोध को नहीं जानते –

नाहं वेद भ्रातृत्व ंनो स्वसृत्वामिन्द्रो विदुरङ्गिी रसश्च घोराः ।

गोकामा में अच्छदयन्यदायमपात इत पणयों वरीयः ।।

विश्वामित्र – नदी – (ऋग्वेद 3/33) राजर्षि विश्वामित्र शुतुद्री और विपाट नामक नदियों से प्रार्थना कर रहे हैं कि – रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरूप मुहूर्तमेवै :।

प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा, वस्युरहने कुशिकस्य सूनुः।।

विश्वामित्र के वचनों को सुनकर नदियों ने कहा –

एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आयत्ते घोषानुत्तरा युगानि।

उक्थेषुकारो प्रति नो जुषस्व, मा नो निकः पुरुषन्ना नमस्ते।।

विश्वामित्र पुनः याचना करते हैं कि आप मेरे लिए सरलता से पार करने योग्य बन जाएँ –

अन्त में नदियाँ विश्वामित्र के लिए रास्ता देती है–

आतेकारो श्रृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन।

नि ते नसै पीप्यानेव योषा, मर्यायेव कन्याशश्वचै ते।।

वैदिक साहित्य का इतिहास

वैदिक काल के विषय में विभिन्न सिद्धान्त –यद्यपि वैदिक काल की निश्चित सीमा निर्धारित करना अति दुष्कर कार्य है फिर भी विद्वानों की धारणा है कि इन सम्पूर्ण वैदिक साहित्यों की रचना लगभग ईसा से पूर्व 2500 वर्ष से लेकर ईसा पूर्व 200 वर्ष तक के युग में हुई। इस दीर्धकालीन युग को वैदिक युग कहते है।

मैक्समूलर – इन्होंने ऋग्वेद का रचना काल 1200 ई.पू. माना है। वैदिक साहित्य को इन्होंने 4 भागों में विभक्त किया है।

(1) छन्दकाल – 200 + 1000 = 1200 ई.पू.

(2) मंत्रकाल – 200 + 800 = 1000 ई.पू.

(3) ब्राह्मणकाल – 200 + 600 = 800 ई.पू.

(4) सूत्रकाल – 200 + 400 = 600 ई.पू.

मैक्समूलर स्वयं अपने मत से सहमत नहीं हैं। उन्होंने लिखा है कि यह निर्धारण अनुमान पर आधारित है।

ए. बेबर – जर्मन विद्वान ए. बेबर का मत है कि वेद कितने प्राचीन हैं यह निश्चित नहीं किया जा सकता, लेकिन इतना कह सकते है कि वेद 1500 ई.पू. से प्राचीन ही है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

जैकोबी – जर्मन विद्वान जैकाबी का वैदिकरचनाकालविषयक सिद्धान्त ज्योतिषशास्त्र पर आधारित है। इन्होंने ऋग्वेद का समय 4500ई.पू. स्वीकार किया है।

VPM CLASSES

बालगंगाधर तिलक – ज्योतिष के आधार पर वेदों का काल निर्धारण करने में तिलक का विशेष स्थान है इन्होंने वेदों का रचनाकाल 4000 ई.पू. से 6000ई.पू. माना है (उन्होंने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया है)

ग्रन्थ	काल	समय
गद्य.पद्यात्मक	अदिति	4000– 6000ई.पू.
ऋक् – सूक्त	मृगशिरा	2500 – 4000 ई.पू.
चतुर्वेद तथा ब्राह्मणग्रन्थ	कृत्तिका	1400 – 2500 ई.पू.
सूत्र एवं दर्शन ग्रन्थ	अन्तिम	500 – 1400 ई.पू.

एम. विन्टरनिट्ज – इन्होंने पुरातत्वविज्ञान के द्वारा वेदों का रचनाकाल स्पष्ट किया है। ब्राह्मणग्रन्थों, पाणिनि –व्याकरण, संस्कृत भाषा, अशोकशिलालेख भाषा, तथा वैदिक भाषा के पारस्परिक तुलनात्मक अध्ययन से ऋग्वेद का रचनां काल 4500 ई.पू. से आरम्भ करके 6000 ई.प. के मध्य स्वीकार किया है।

भारतीय परम्परागतविचार –अविनाशचन्द्र दास – ऋग्वेदिक इण्डिया में वेद का रचनाकाल अनेकों लाखों वर्ष पूर्व स्वीकार किया हैं इनके अनुसार भौगोलिक गणना के आधार पर वेद का रचनाकाल 25000 वर्ष पूर्व है।

प.दीनानाथ शास्त्री– वेदों का रचनाकाल 300000 वर्ष पूर्व माना हैं शास्त्री जी ने यह 'वेदिकालनिर्णय' पुस्तक के आधार पर सिद्ध किया है।

भण्डारकर – डॉ. आर.जी. भण्डारकर ने वेदों का रचनाकाल 600 ई.पू. माना है।

पं शंकर –बालकृष्ण –दीक्षित महोदय– यह नक्षत्रों के निर्देश करके ज्योतिष गणना आधार पर शतपथ ब्राह्मण का रचनाकाल 3000ई.पू. स्वीकार करतें है। शतपथ ब्राह्मण से प्राचीन ऋग्वेद उनके अनुसार 3500ई.पू. का हो सकता है।

ऋग्वेद का क्रम

ऋग्वेद का क्रम हमें दो रूपों में प्राप्त होता है।

अष्टक क्रम – इसके अनुसार ऋग्वेद आठ अष्टकों तथा प्रत्येक अष्टक आठ –आठ अध्यायों में विभक्त है। इस प्रकार कुल अध्याय 8 × 2 = 64 होते हैं।अध्याय वर्गो में विभक्त है और प्रत्येक वर्ग में पाँच मंत्र है। इस प्रकार ऋग्वेद में आठ अष्टक, 64 अध्याय 2006 वर्ग प्राप्त होते हैं।

मण्डल क्रम –ऋग्वेदिक मण्डल क्रम वैज्ञानिक तथा महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार ऋग्वेद 10 मण्डलों में विभक्त है इसमें 25 अनुवाक और इन अनुवाकों में 1028 सूक्त $10580\frac{1}{4}$ मंत्र हैं।

VPM CLASSES

संहिताओं के पाठभेद

प्राचीन ऋषियों ने वेदमंत्रों की सुरक्षा के लिए मंत्रों के पाठ दो प्रकार से किए है – संहिता पाठ, पद पाठ। संहितापाठ और पद पाठ का तुलनात्मक अध्ययन करने से संहिता पाठ को पद पाठ में परिवर्तित करने के कुछ नियम निम्नवत् है –

• पदों का मौलिक स्वराघात, जो कि संहिता पाठ में परिवर्तित हो गया था, पद पाठ में मौलिक रूप में दिया गया है।

• संहिता पाठ में जो सन्धियाँ हो उन्हें पदपाठ करते समय तोड़कर पदों को अलग –अलग करना चाहिए।

• संहिता पाठ में समासों के पदों को अलग – अलग नहीं किया जाता है पद पाठ में द्वन्द्व समास को छोड़कर समस्त पदो के बीच पदों की पृथकता प्रदर्शित करने के लिए अवग्रह (ऽ) का प्रयोग किया जाता है।

अभीवृतं कृशनैः (ऋकसंहिता)

अभिऽवृतं । कृशनैः।विश्वऽरूपम् ।।

• ऋग्वेद में पाठों का शुद्व रूप बनाए रखने के लिए पद पाठ के अतिरिक्त क्रम पाठ, जटापाठ, घनपाठ भी प्रचलित हैं।

वेदों के पाठकार –

ऋग्वेद	–	शाकल्य
शुक्लयजुर्वेद	–	शाकल्य
कृष्ण यजुर्वेद	–	आर्षेय
सामवेद	–	गार्ग्य
अथर्ववेद	–	अज्ञात

वेदाड्गः

वेदस्य अंगानि इति वेदाड्गः। अंग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अंगानि इस व्युत्पत्ति के अनुसार जिसके द्वारा किसी वस्तु को पहचानने में सहायता प्राप्त होती है उन्हें अंग कहते हैं। वेदों के अर्थ जानने के लिए जिन शास्त्रों की आवश्यकता होती है उन्हें वेदाड्गः कहते हैं।

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरूक्तं ज्योतिष तथा।

कल्पश्चेति षऽड्गागानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

वेदांगों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है–

VPMCLASSES

शिक्षा – "शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य" – जिस शास्त्र से वेदमन्त्रों के शुद्ध उच्चारण में सरलता और सहायता होती है उस शास्त्र को शिक्षा कहते हैं। सायणाचार्य के अनुसार – ' स्वरवर्णाद्युच्चा रणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा। तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा के छः अंग वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम तथा सन्तान मिलते हैं।

वेद		शिक्षा ग्रन्थ
ऋग्वेद	–	पाणिनीय शिक्षा
यजुर्वेद	–	याज्ञवल्क्य, व्यास, भारद्वाज, माण्डव्य आदि शिक्षा
सामवेद	–	नारद तथा शाकटायन शिक्षा
अथर्ववेद	–	माण्डूकी शिक्षा

कल्प –' हस्तौ कल्पोऽथपठ्यते '– जिसमें यज्ञ की विधियां तथा वेद विहित कर्मो का प्रतिपादन किया गया है उसे कल्प के नाम से जाना जाता है। ' कल्पों वेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम् ।' विषय की दृष्टि से कल्प सूत्रों को चार भागों मे विभक्त है–

श्रौत सूत्र – इसमें श्रुति द्वारा प्रतिपादित वैदिक यज्ञों का वर्णन किया गया है श्रुतियों में प्रतिपादत दर्शपौर्णमासयज्ञ,अग्नि होत्र, पशुयाग, सोमयाग आदि का वर्णन है।

वेद	श्रौतसूत्र
ऋग्वेद	आश्वलायन शांखायन
यजुर्वेद	कात्यायन, पारस्कर, कठ बैखानस आदि
सामवेद	लाट्यायन, आर्षेय, खादिर, जैमिनीय
अथर्ववेद	बैतान श्रौतसूत्र

गृह्यसूत्र – गृध्यसूत्रों मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों द्वारा किए जाने वाले आवश्यक अनुष्ठान यज्ञों आदि का विस्तृत वर्णन है। इनमें पंचमहायज्ञों, सातपाकयज्ञों सोलह संस्कार, गृहप्रवेश आदि गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित विधियों का वर्णन है।

वेद	गृध्यसूत्र
ऋग्वेद	आश्वलायन शांखायन
यजुर्वेद	बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी आदि
सामवेद	खादिर, गोभिल, जैमिनीय
अथर्ववेद	कैशिक गृह्यसूत्र

VPM CLASSES

धर्मसूत्र– धर्मसूत्रों में धार्मिक नियमों का राजा तथा प्रजा के कर्त्तव्यों का विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है।

वेद	धर्मसूत्र
ऋग्वेद	वशिष्ठ तथा विष्णु
यजुर्वेद	हारित, शंख, बौधायन मानव आदि
सामवेद	गौतम

अथर्ववेद पर कोई धर्म सूत्र प्राप्त नहीं होता है।

शुल्वसूत्र– यज्ञ वेदी निर्माण आदि के नियमों का वर्णन शुल्व सूत्रों में ही पाया जाता है । भारत वर्ष में रेखागणित और प्राचीन इतिहास के ज्ञान के लिए शुल्वसूत्रों का अध्ययन आवश्यक है।

शुल्वसूत्र केवल यजुर्वेद पर ही प्राप्त होते है – कात्यायन, बौधायन, आपस्तम्ब तथा मानव शुल्व सूत्र।

व्याकरण – 'मुखं व्याकरण स्मृतम्' संस्कृत वाङ्.मय में प्रयुक्त शब्दों के शुद्ध अशुद्ध विचार के लिए व्याकरण का ही अध्ययन किया जाता है। ' व्याक्रियन्ते विविच्यन्तें शब्दा अनेनेति व्याकरणम्' । ऋग्वेद में व्याकरण को एक वृषभ के रूप में माना है। कात्यायन और पंतजलि ने व्याकरण के 'रक्षोहागमलध्वसन्देहाः प्रयोजनम्' बतालाए हैं। व्याकरण के प्रतिष्ठा सम्पन्न आचार्य पाणिनि ने अपने ग्रन्थ अष्टाध्यायी में अपने पूर्ववर्ती अनेक वैयाकरणों का नाम निर्देश किया है। पाणिनि कृत अष्टाधायी में आठ अध्याय है जिनमें संज्ञा, प्रत्यय, सन्धि आदि का विवेचन किया है।

निरुक्त –' निरुक्तं श्रोतमुच्यते' निघण्टु वैदिक कोश के भाष्य के रूप में है। निघण्टु में पाँच अध्याय है। वर्तमान में निघण्टु पर यास्ककृत निरुक्त प्राप्त होता है जिसमें 12 अध्याय है तथा दो परिशिष्ट भाग में दिए गए हैं। इस प्रकार निरुक्त में 14 अध्याय है जो नैघण्टुक, नैगम तथा दैवत काण्ड तीन काण्ड़ों में विभक्त है। निरुक्त में वर्णागम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश, धातुओं का अनेक अर्थों में प्रयोग ये प्रतिपाद्य विषय हैं।

छन्द – 'छन्दः पादौ तु वेदस्य'–छदांसि छादनात् अर्थात् जो वेदों के आवरण है उन्हें छन्द कहते है मंत्रों का सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए छन्द ग्रन्थों की रचना की गई। छन्द वेदांग का प्रतिनिधि ग्रन्थ आचार्य पिंगल का छन्द सूत्र है जो आठ अध्यायों में विभक्त है। इसमें प्रथम से चतुर्थ अध्याय तक वैदिक और उसके बाद लौकिक छन्दों का वर्णन किया गया है।

वैदिक छन्दों में अक्षर गणना होती हैं जबकि लौकिक छन्दों में गुरु लघु पर विचार किया जाता है।

ज्योतिष – ' ज्योतिषामयनं' – यज्ञ के विधि विधान के लिए ऋतु –मास – तिथि नक्षत्र – पक्ष आदि की आवश्यकता होती है। यात्रा के सम्पादन के लिए ज्योतिष की आवश्यकता होती है। वैदिक

VPM CLASSES

संहिताओं में कालविभाजन सर्वत्र उपलब्ध है। आचार्य लगधकृत 'वेदांग ज्योतिष' इसका प्रतिनिधि ग्रन्थ है। वेदांग ज्योतिष का सम्बन्ध ऋग्वेद तथा यजुर्वेद से हैं भास्कराचार्य ने भी ज्योतिष के महत्व को स्वीकार किया है –

वेदास्तावद् यज्ञकर्मप्रवृत्ता यज्ञा प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्माद् कालवोधी यथा स्यात वेद्ागगत्व ज्योतिषस्योक्तमस्मात्।।

VPM CLASSES